आने वाली छात्र संघ से छह माँगें

यदि आपने छात्र यूनियन पर हमारे लेख को पढ़ा है, तब आपने ध्यान दिया होगा कि छात्रों की असक्रियता एक बेहतर छात्र यूनियन बनाने की राह में सबसे बड़ा रोड़ा है।

पूर्व लेखों को पढने के लिये इस लिंक को दबायें

जबकि हमारी टीम केवल डिजिटल माध्यम के द्वारा ही कार्य करती है, हमने निश्चय किया है कि हमें अपनी हद में रहकर सक्रिय छात्रों की भूमिका को निभाना चाहिए। इस लेख में हम अपनी उन छह मांगों को सूचीबद्ध करते हैं जिसमें हम मानते हैं कि ये वे सबसे महत्वपूर्ण मुद्दे हैं जिन पर छात्र यूनियन को त्वरित कार्रवाई करने की आवश्यकता है। इस वर्ष केवल एक पैनल है जो कि निर्विरोध जीत रहा है और इसलिए ये माँगें उन्हीं की ओर केंद्रित हैं। हम नए यूनियन को सत्ता में आने पर बधाई देते हैं। हर बार जब भी एक नई टीम का गठन होता है, यह आशावादी होने का एक अवसर लेकर आता है। हम आशा करते हैं कि यह यूनियन एक मजबूत टीम साबित होगी और छात्रों के कल्याण के लिए काम करेगी।

हालाँकि, हम किसी तरह की मदद तो नहीं कर सकते हैं लेकिन उचित चुनावों की कमी के ऊपर अपनी निराशा को अभिव्यक्त जरूर कर सकते हैं। एक मजबूत विपक्षी नेता जिसके पास कुछ शक्तियाँ हों का होना तो दूर (जैसा कि हमारे पहले के लेख में सोचा गया था), बल्कि इस वर्ष तो हमारे कॉलेज में विपक्षी पैनल ही नदारद है। हालाँकि, हम इस बात से निराश थे कि चुनाव के बाद विपक्षी पैनल के पास कोई सार्थक शक्ति या संरचनात्मक भूमिका नहीं होती है, लेकिन विपक्षी पैनल के न होने जो शून्यता पैदा होगी वो बिल्कुल एक अलग स्तर की ही है। इससे चुनावों के दौरान छात्रों के कल्याण पर होने वाली बहसों और चर्चाओं की गुंजाईश भी खत्म हो जाती है।

हम चिन्हित करना चाहेंगे कि हमने अपने पिछले लेख में यूनियन के लिए कुछ अति-आवश्यक संस्थागत और संरचनात्मक बदलाव सुझाए थे, लेकिन, हमें लगता है कि अब जो माँगें हम रखने जा रहे हैं वे बिना किसी ढाँचागत बदलाव के भी पूरी की जा सकती हैं। हालाँकि, ये तभी मुमकिन होगा जब इन्हें प्राथमिकता दी जाए या इनको भी Crossroads और Conclave के बराबर ही अहमियत मिले।

अब हम अपनी माँगों पर आते हैं जो इस प्रकार हैं:

1. **नए होस्टल का खोला जाना**:
   लड़कियों का एक नया होस्टल जो कि अभी निर्माणाधीन है, लगभग छह वर्षों से इसी हालत में है। रहने की समस्या एक बड़ी समस्या है जिससे दिल्ली विश्वविद्यालय के हर छात्र को दो-चार होना पड़ता है। जैसा कि इस ब्लॉग पर हमारे सबसे पहले के लेख में बताया गया था, दिल्ली जैसे शहर में किराए के घर का खर्च खासतौर पर गैर-संभ्रांत छात्रों के लिए पहुँच से बाहर है। विशेषकर SRCC में, दिल्ली के बाहर से आये हुए छात्रों की संख्या काफी ज्यादा है। लेकिन, इसके बावजूद भी कॉलेज

में केवल 50 लड़कियों को ही रहने की सुविधा का फायदा मिलता है। तथ्य यह है कि प्रशासनिक और अन्य देरी की वजह से जो होस्टल बिल्डिंग और अधिक छात्रों को आवास प्रदान कर सकती है वो अपने अंजाम के करीब पहुँचकर मुँह बाये खड़ी है और यह नाकाबिल-ए-बर्दाश्त है। छात्र यूनियन कदम उठाकर प्रबंधन और प्रशासन पर दबाव बनाकर उन्हें छात्रों के नए होस्टल को शीघ्र-अतिशीघ्र खोलने के लिए बाध्य कर सकती है और देरी होने के कारणों को भी सार्वजनिक करने की माँग कर सकती है।

2. **लड़कियों के वर्तमान होस्टल की हालत को सुधारना सुरक्षा के नाम पर होने वाले भेदभाव-पूर्ण व्यवहार को खत्म करना:**
    - ललड़कि के होस्टल बिल्डिंग के दरवाजे (यह कॉलेज का मुख्य-द्वार नहीं है, बल्कि बिल्डिंग के सामने का दरवाजा है) को रात 8:30 बजे के बाद बाहर से बंद कर दिया जाता है। 11:30 बजे के बाद पीछे के ग्रिल वाले दरवाजे को भी बंद कर दिया जाता है। यह न केवल रहने वालों के लिए होस्टल परिसर में उपलब्ध सीमित जगह के उपयोग को प्रतिबंधित कर देता है, बल्कि यह किसी दुर्घटना की स्थिति में आपातकालीन निकास के न होने की वजह से उनकी जान को भी जोखिम में डाल देता है। छात्राओं को अंदर बंद करने की बजाए किसी महिला सुरक्षा-गार्ड की तैनाती के द्वारा सुरक्षा की समस्या को आसानी से हल किया जा सकता है। बार-बार निवेदन के बावजूद न तो कॉलेज प्रशासन और न ही छात्र यूनियन इस समस्या की सुध ले रहा है।
    - अगला सबसे अहम और मूलभूत बदलाव की आवश्यकता भेदभाव-पूर्ण कर्फ़्यू टाइमिंग को खत्म करने की है जो रात 10:30 निर्धारित की गई है, जो लड़कों के होस्टल जैसा ही है। औरत की आजादी को दबाकर उसे सामाजिक कुरीतियों से कभी नहीं बचाया जा सका है। बल्कि यह व्यवस्था एक दूषित सोच का परिणाम है, जिसकी वजह से महिलाओं को किसी अनचाही घटना से सुरक्षा के नाम पर अपनी स्वतंत्रता का सौदा करना पड़ता है। किसी भी अभिवावक को अपने बच्चों के घूमने-फिरने पर पाबंदी लगाने को प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए, दूसरे बच्चे तो दूर की बात हैं। कर्फ़्यू टाइमिंग में होने वाले भेदभाव को किसी भी हालत में बंद करना ही होगा।

छात्र यूनियन होस्टल निवासियों को संगठित करके इसके लिए दबाव बना सकता है।

3. **पुस्तकालय के समय को बढ़ाना:**

हमारे कॉलेज में एक उचित प्रकार से कार्यरत और प्रचुर संग्रह से युक्त पुस्तकालय है। लेकिन, परीक्षा के अलावा छात्रों के लिए पुस्तकालय केवल 5:30 बजे तक ही खुला रहता है। यह उस कॉलेज के लिए किसी भी प्रकार से वाजिब नहीं है जो छात्रों के लिए अपने उच्चस्तरीय आधारभूत संरचना और संसाधनों की बड़ाई करता है। आदर्श रूप से पुस्तकालय पढ़ने के लिए एक शांत और आरामदायक जगह के तौर पर चौबीसों घंटे खुला रहना चाहिए, जो कि उन बच्चों के लिए शायद पहुँच से बाहर है जो भीड़ भरे किराये के मकानों या फ्लैटों में रहते हैं। यह सुविधा होस्टल में रहने वाले छात्रों के लिए काफी फायदेमंद साबित होगी, यह उम्मीद करते हुए कि उनकी कर्फ़्यू टाइमिंग को भी बढ़ाया जाए। पिछले वर्ष यह यूनियन के एजेंडे का भी हिस्सा था। एक ओर जहाँ परीक्षा के दौरान पुस्तकालय के समय को बढ़ाया गया था, दूसरी ओर इसे कभी चौबीस घंटे के लिए नहीं खोला गया, और परीक्षा के अलावा पुस्तकालय के समय में कोई बदलाव नहीं

किया गया। छात्र यूनियन को पुस्तकालय के समय में प्रस्तावित बदलावों को अमल में लाने के लिए प्रशासन पर दबाव बनाना चाहिए, और यदि प्रशासन मना कर देता है तो आगे की बहसों को जगह देने और अन्य कदम उठाने के लिए, वजहों को सार्वजनिक करने की माँग भी करनी चाहिए।

4. स्कॉलरशिप:

SRCC, दिल्ली विश्वविद्यालय के अन्य कॉलेजों के मुकाबले लगभग तीन गुना अधिक फ़ीस वसूलता है। इसके अलावा दिल्ली के बाहर से आए हुए छात्रों के लिए रहने का खर्च भारी-भरकम होता है और निम्न आय-वर्ग परिवारों के लिए इसे वहन कर पाना काफी मुश्किल होता है। ऊँची फ़ीस के बोझ को कम करने के लिए उचित स्कॉलरशिप और फ़ीस में छूट की सुविधा होनी चाहिए। इसको अमली जामा पहनाने के लिए छात्र यूनियन दो-मुखी कदम उठा सकता है:

- कॉरपोरेट्स से स्पॉन्सरशिप हासिल करके स्कॉलरशिप की व्यवस्था करना। उन्हें उनके CSR फण्ड से स्कॉलरशिप के लिए योगदान देने के लिए सहमत करके छात्र यूनियन एक बेहद अच्छा काम कर सकता है, क्योंकि इसमें कोई शक नहीं है कि छात्र यूनियन किसी भी चीज के लिए स्पॉन्सरशिप हासिल करने में माहिर है। इस पहल को बस प्राथमिकता देने की देर है।
- पहले से उपलब्ध स्कॉलरशिप और फीस में छूट के बारे में छात्रों के बीच जागरूकता फैलाना और उन्हें इनसे परिचित करवाना।

5. शुरुआती साल में गैर-अर्थशास्त्र/कॉमर्स पृष्ठभूमि वाले छात्रों के लिए ब्रिज-कक्षाएँ आयोजित करना:

विश्वविद्यालय के नियमों के अनुसार, विद्यार्थियों को अर्थशास्त्र ऑनर्स और बी.कॉम ऑनर्स में दाखिला लेने के लिए कक्षा बारहवीं में अर्थशास्त्र और कॉमर्स विषय पढ़े होने की आवश्यकता नहीं है। हालाँकि, इन विषयों में बिना किसी पृष्ठभूमि के दाखिला लेने वाले छात्रों की संख्या कम है, और शिक्षक पहले से मानकर चलते हैं कि सभी छात्रों के पास इन विषयों से जुड़ा कुछ पूर्व-ज्ञान होगा। इससे वे छात्र कक्षा की गतिविधियों में पीछे छूट जाते हैं जिनके पास इन विषयों का आधारभूत ज्ञान नहीं है, और इस वजह से आगे जाकर उनकी शिक्षा नकारात्मक रूप से प्रभावित होती है। ब्रिज-कक्षाओं का आयोजन, दूसरे और तीसरे वर्षों के छात्रों की सहायता लेकर किया जा सकता है, और ये शिक्षकों की देख-रेख में संगठित की जा सकती हैं, जो इन कक्षाओं को सामान्य दिशा-निर्देश दे सकते हैं। छात्रों को स्वयं ही इन कक्षाओं में भाग लेने के लिए सहमत करके यह सुनिश्चित हो जाएगा कि शिक्षकों पर ज्यादा दबाव न आए, और ये कक्षाएँ किसी भी तरह से डरावनी न हों क्योंकि इन्हें साथी-समूह द्वारा संचालित किया जाएगा। छात्र यूनियन को इच्छित प्राध्यापकों और प्रिंसिपल से बातचीत करके इन कक्षाओं को जल्द-से-जल्द शुरू करवाना चाहिए।

6. ऑडिटोरियम:

छात्र यूनियन को ऑडिटोरियम को जल्द चालू करने के लिए बल देना चाहिए, जिसका निर्माण इतने लंबे समय से चालू है, छात्रों को ऐसा एहसास होता है कि यह हमेशा से बन ही रहा है। यह कॉलेज में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों को बुरी तरह से प्रभावित करता है, और कामचलाऊ ऑडिटोरियम को बनाने के लिए फिजूल में भारी मात्रा में संसाधनों की बर्बादी होती। इसके ऊपर से को-ऑप और फ्रंट लॉन में कार्यक्रमों के मंचन से कैंपस की दैनिक गतिविधियों और कक्षाओं के संचालन में व्यवधान उत्पन्न होता है।

यूनियन को इन माँगों पर ध्यान दिलवाने के लिए, यह मुमकिन है कि छात्र बिना किसी औपचारिक माध्यम के भी कुछ निश्चित कदम उठाएँ। हालाँकि, हम मजबूती से छात्रों और यूनियन के बीच एक औपचारिक संचार माध्यम के पक्ष में खड़े हैं, छात्रों की माँगों पर यदि कोई कार्रवाई नहीं की जाती है तो इस स्थिति में छात्र यूनियन को जवाबदेह ठहराया जाए (छात्रों की माँगों को रिकॉर्ड किया जाए और सार्वजनिक किया जाए), और यह भी सुनिश्चित किया जाए कि छात्र यूनियन तक सभी छात्रों की आसान पहुँच है। नहीं तो, जैसा हमें अनुभव से पता है, सिर्फ वही लोग जो यूनियन सदस्यों के मित्र हैं, या वे जिनके पास राजनैतिक समझ है, अपनी माँगों की गंभीरता से सुनवाई करवा सकते हैं (हालाँकि, इन माँगों पर भी कार्रवाई की जाती है या नहीं ये बिल्कुल अलग मामला है)। यदि यूनियन वाकई में छात्रों के कल्याण की परवाह करता है, तो यह इसका परम कर्तव्य है कि ये छात्रों के लिए एक सहजता पूर्ण और प्रोत्साहित करने वाला वातावरण का निर्माण करे जिससे कि वे अपनी माँगों को यूनियन के पास ले जा सकें। छात्रों की दयनीय राजनैतिक समझ को देखते हुए, यह सोचना नासमझी होगी कि छात्र विश्वास के साथ अपनी माँगों पर चर्चा करने के लिए यूनियन सदस्यों के पास जाएंगे, जैसा कि हमारे पहले अंश में पहले ही बताया गया है। इस प्रकार, हमें सख्त आवश्यकता है कि हम एक औपचारिक व्यवस्था बनाएँ, जहाँ पर छात्र इस चीज को लेकर अवाक न हों कि कैसे छात्र यूनियन का रुख किया जाए, और जहाँ पर यूनियन के पास पहुँचना आसान भी हो (यह साफ है कि यूनियन और प्रशासन के बीच एक औपचारिक संचार माध्यम की तरह ही यह भी एक चुनौतीपूर्ण और नौकरशाही वाली व्यवस्था न हो)।

जबकि यह सराहनीय है कि 'Legacy of Excellence' ने कम-से-कम छात्रों के सुझावों को लेने के लिए एक फॉर्म जारी किया है कि कैसे उन्हें कॉलेज के मुद्दों पर आगे बढ़ना चाहिए, हम आशा करते हैं कि इन सुझावों को सार्वजनिक किया जाए, और इसके साथ यह भी बताया जाए कि प्रत्याशी इस पर क्या रुख रखते हैं, जिससे कि हम बेहतर ढंग से यूनियन के काम पर अपनी राय बना पाएँ। इसके अतिरिक्त हम यह भी आशा करते हैं कि छात्रों से उनकी राय लेने वाले कार्य को और तल्लीनता के साथ किया जाए (इन फॉर्मों को कम-से-कम उतना ही प्रसारित किया जाए जितना कि Crossroads के पोस्टरों को किया जाता है), और यह लगातार और प्रभावशाली ढंग से किया जाए।

यूनियन सदस्य एक छोटी सी पहल के जरिये जिसमें कि वे एक सप्ताह के लिए हर शुक्रवार को लंच के वक्त एक निश्चित जगह पर तैनात रहकर अपने में छात्रों का विश्वास जगा सकते हैं और यह भविष्य में उनके लिए काफी कारगर साबित हो सकता है। इस पहल को रोकने से पहले यूनियन को कम-से-कम इसे एक सेमेस्टर तक अवश्य ही जारी रखना चाहिए, क्योंकि परिस्थिति को देखते हुए, छात्रों को इन चीजों के प्रति अपनी प्रतिक्रिया देने में समय लगेगा। इसके ऊपर से, छात्र यूनियन में विश्वास न होने की समस्या इतनी जटिल है कि इसका आसानी से सुलझना मुश्किल है। हालाँकि, हम छात्र समुदाय को लामबंद करने की चुनौती को मानते हैं, लेकिन ऐसा नहीं है कि अगर यूनियन छात्रों को एकजुट करना चाहे तो उसके पास ऐसा करने की शक्ति नहीं है। किसी खास दिन किसी पैनल को समर्थन जताने के लिए जब छात्रों के कपड़ों का रंग तय किया जा सकता है, तब यह अपने आप में छात्रों के बीच यूनियन के पहुँच की क्षमता का सबूत है। इस प्रकार, हमारे लेखों से यह पूरी तरह से साफ है कि किसी खास नेता या टीम को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है, क्योंकि ये समस्याएँ व्यवस्था में है, और इसलिए एक बड़ा बदलाव तभी आ सकता

है जब एक क्रांतिकारी नेता मैदान में आकर 'सब कुछ CV के लिए ही करना है' वाली संस्कृति से अपने आप को बचा पाए और छात्रों के कल्याण के लिए बड़े कदम उठाए।

इतना सब कहने के बाद, हम इस बात पर जोर देना चाहेंगे कि ऐसा बिल्कुल नहीं है कि छात्र तब तक कुछ नहीं कर सकते जब तक कि ऐसी व्यवस्था लागू नहीं हो जाए, या जब तक यूनियन अपने आप पहल न करे। यदि, एक छात्र के रूप में आपको कुछ नहीं समझ आ रहा है कि इस पर आगे कैसे बढ़ा जाए, नीचे कुछ बिंदु हैं जो आपको शुरुआत करने में मदद कर सकते हैं:

- पहले कदम के रूप में, अपने माँगों को एकजुट करें जिससे कि आपको सहूलियत हो कि आपके लिए कौन-से मुद्दे मायने रखते हैं।
- पैनल के पास सोशल मीडिया के द्वारा पहुँचे। यह तरीका आपकी माँगों पर अधिक समर्थन और ध्यान हासिल करने के लिए कारगर है। आपको कम-से-कम 'Legacy of Excellence' के फेसबुक पेज पर जाकर दिए गए फॉर्म को जरूर भरना चाहिए।
- सामूहिक माँगों को सामने रखिए, खासकर उस स्थिति में जब आपके पास अपने आप को इकट्ठा करने का आसान विकल्प हो, उदाहरण के तौर पर होस्टल निवासियों के मामले में।
- दृढ़ संकल्प के साथ और खुलकर कहिए कि आप अगले साल सिर्फ Crossroads पर अपना मत नहीं देंगे, और इस निर्णय पर अडिग रहिए। बजाय, आप इस पर चौकन्ने रहिए कि यूनियन ने इस साल आपके लिए क्या किया है और इसे अपने निर्णय के पैमाने के तौर पर इस्तेमाल कीजिए।
- अगले वर्ष जब आपके पास प्रत्याशी आए, तब आप सुनिश्चित कीजिए कि आप केवल उनके अभियानों को सुनने के लिए नहीं बैठे हैं और अपनी माँगों को उन्हें स्पष्ट रूप से बताइए।

हम कहना चाहेंगे कि ऐसी बहुत सारी चीजें हैं जो छात्र यूनियन इस साल कर सकता है। हालाँकि, हमारा यह मकसद नहीं है कि हम सभी मुद्दों की एक अति-व्यावक सूची बनाए, लेकिन हम चाहते हैं कि हम छात्र समुदाय और साथ-साथ यूनियन को कार्य करने के लिए बाध्य करें। और, इसलिए यदि कोई भी छात्र समूह आगे आकर छात्र यूनियन को अपनी माँगों पर कार्य करने के लिए कहता है (चाहे वे माँगें सूची में से हों या इससे बाहर से हों), और छात्र यूनियन अगर एक भी मुद्दे पर गंभीरता से काम करना शुरू कर देता है जिसका छात्रों से सरोकार है, तब यह अपने आप में एक जश्न का कारण होगा। और, यदि काम अपने अंजाम तक किसी वजह से नहीं पहुँचता है, तब छात्रों की माँग कि छात्र यूनियन उनकी माँगों को पूरा करने की ओर कदम बढ़ाने की कोशिश करे, अपने आप में जिम्मेदार प्रतिनिधितित्व के लिए एक सक्रिय छात्र भागीदारी की संस्कृति की शुरुआत करेगा। हमारे कॉलेज में अभी गैर-राजनैतिक और दयनीय स्थिति को देखते हुए, इस तरह की कामयाबी कोई छोटी सफलता नहीं होगी।